।। प्रेमाश्रोत ।।

अज़्मते-यथार्थ गीता

अज़्मते-यथार्थ गीता

('यथार्थ गीता' का माहात्म्य)

बड़ी अक़ीदत१ से कह रहा हूँ यथार्थ गीता की है ये अज़्मत२करेगा जो भी मुताअलः३इसकाहक़ीक़तों४कापयाम५देगा।

ज़ीस्त६ की जंग आज़्माई७ में कौन हारा है कौन जीता हैइस हक़ीक़त को जो बतातीहैवहशरीअत८'यथार्थगीता'है।

ज़ीस्त को बासुकून घर देगी होंगे जिसमें समर९ शजर१० देगी वह है अज़्मत 'यथार्थगीता'काजोहक़ीक़तभरीनजरदेगी।

हसरतों का गुलाब खिल जाये दुन्यवी जख़्म दिल का सिल पाये कोई पढ़ले 'यथार्थगीता'तो राहे-हक़कानिशानमिलजाये।

ध्यानमिलताहैज्ञानमिलताहैनूरवहलाबयान११मिलताहैआपपढ़िये'यथार्थ गीता'कोरूहकोइत्मीनानमिलताहै।

साधना, ध्यान, ज्ञान है इसमें ज़िन्दगी का बयान है इसमें आप पढ़िये 'यथार्थ गीता'को सारेदुःखकानिदानहैइसमें।

शंकाओं का समाधान मिल जायेगा उस राहे-हक़ का निशान मिल जायेगा यदि 'यथार्थगीता'-पथ का अनुसरणकरेंतोहैयक़ीनआ'लामकानमिलजायेगा।

वहअसीम सत्ता क्या कैसी, इसकी खबर मिलेगी,परमलक्ष्य तकजोपहुंचातीहै वह डगर मिलेगी,चाह रहेयदिउसस्वरूपका,पावनदर्शनपानागीताकीटीका 'यथार्थगीता'सेनजरमिलेगी।

—मुनीर बख़्श "आलम"

१. श्रद्धा, २. माहात्म्य, ३. समीक्षा या अध्ययन, ४. सच्चाइयाँ, ५. सन्देश, ६. जिन्दगी, ७. संघर्ष में, ८. धर्मशास्त्र, ९. फल या परिणाम, १०. पेड़, ११. अव्यक्तयाअनिर्वचनीय।